सन्देश सार सहित बेहद ड्रामा के डायरेक्टर,एक्टर्स प्रकृति प्रति ज्ञान रत्नों व शुभ संकल्पों की माला

विश्व की आत्माओं उठो जागो

मन्मनाभव – जन्मजन्मान्तर के पापों को नष्ट करने के लिए अपने को ज्योतिबिंदु आत्मा समझ मुझ निराकार ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा शिव को याद करो।

धरा पर भगवान आ चुके हैं स्वर्ग स्थापन करने

मध्याजीभव – भविष्य स्वर्गीय दैवी दुनिया में १००% पवित्रता, सुख, शान्ति समृद्धि का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करने के लिए दैवी गुण धारण करो। निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो।

शिवबाबा

ब्रह्माबाबा
मम्मा

संगमयुगी
ब्राह्मण

८, १०८ रत्न
१६१०८ दैवी
रॉयल घराना

९ लाख दैवी
परिवार

३३ कोटि
देवी
देवता

धर्म स्थापक,
धर्म नेता

सप्त ऋषि
ऋषि,मुनि,
सिद्ध

योगी,
सन्यासी
तपस्वी.

साधु, संत
भक्त,
ब्राह्मण

ग्रन्थाकार
लेखक कवि
गायक संगीतकार

पूर्वज,
मात-पिता
मित्र,सम्बन्धी

स्वतंत्रता
सेनानी,
महापुरुष

राज्यकर्ता
राजनेता,
प्रशासक

किसान
समाज सुधारक
समाज सेवक

शिक्षक, डॉक्टर
वैज्ञानिक
इंजिनियर

उद्योगपति,
व्यापारी

जज,बैरिस्टर
मीडिया कर्मी

कानून
देश, समाज
रक्षक

कलाकार
खिलाड़ी,
मनोरंजन कर्ता

सर्व विशेष व
शेष आत्माएं

प्रकृति, ५तत्व
प्राणी,जीवजंतु
ग्रह . सितारे

ड्रामा

होली बनो पवित्र बनो
कर्मातीत बनो
नमस्ते, आभार, रिगार्ड, शुक्रिया

निःस्वार्थ प्रेम
शुभ भावना शुभ कामना

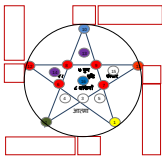

आत्मा बिंदु, शिवबाबा बिंदु, ड्रामा बिंदु
यह सृष्टि नाटक अब समाप्त हो रहा है
अब अशरीरी बन घर परमधाम चलना है

अविरत अबाध्य गति से चलने वाले इस सृष्टिरुपी नाटक में आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति का अविनाशी खेल अनादि काल से चक्र की भांति चल रहा है जिसकी हर ५ हजार वर्ष पश्चात हुबहू पुनरावृत्ति होती है, जिसमें परमात्मा मुख्य एक्टर व निर्देशक, प्रकृति रंगमंच व सभी आत्माएं पार्टधारी बन अपना अपना निश्चित पार्ट बजा रही है |

समय की सुई अब सृष्टि महापरिवर्तन की ओर ईशारा कर रहा है | पुरानी सृष्टि की समाप्ति और नई सृष्टि का आरंभ शीघ्र होने जा रहा है | सभी आत्माओं के लिए अब इस सृष्टि रुपी रंगमच से विदाई लेने की अंतिम घड़ी आ पहुंची है | सभी आत्मा रुपी एक्टर्स को ५ तत्वों से बने शरीर रुपी चोले और देह के संबंधों को त्याग अपने वास्तविक निवास परमधाम की ओर प्रस्थान करने का ईश्वरीय निमंत्रण मिल चुका है | महाविनाश के पहले आधे कल्प (द्वापर व कलियुग) के सारे विकर्मों का खाता परमात्मा की याद द्वारा, कर्मभोग द्वारा या सजा द्वारा यही समाप्त करना है क्योंकि यही वह समय है जब आत्माएं ५ विकारों के वशीभूत हो विकर्म करना शुरू करती है और कर्म बन्धनों तथा दैहिक संबंधों के प्रभाव में आकर अपने वास्तविक स्वरुप, गुण एवं कर्तव्यों को विस्मृत कर देती है | अतः नयी स्वर्गीय सृष्टि में पुनः अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार सुनिश्चित करने हेतु अपने को ईश्वरीय संतान निराकार ज्योतिबिन्दुरूप आत्मा समझ निराकार ज्योतिबिन्दुरूप परमात्मा को स्नेहपूर्वक याद कर विकर्म विनाश करने के साथ साथ दैवीगुण धारण करने का ईश्वरीय फरमान हमें मिला है |

अंत में परमात्मा शिव पिता सहित सभी पार्ट धारी व सहयोगी को इस रंगमंच पर विधिवत पार्ट बजाने व सहयोग के लिए शुभ भावना, शुभ कामना, निःस्वार्थ प्रेम के साथ दिल का नमन, आभार, रिगार्ड तथा शुक्रिया व पांच तत्वों की इस दुनिया के सभी व्यक्ति, वस्तु , वैभव के अस्थायी लगावों अथवा बंधनों से मुक्त बन अपने वास्तविक घर मुक्तिधाम/परमधाम में चलने व नई सृष्टि का शुभारंभ करने के लिए विशेष बधाई |

परमात्मा, प्रकृति और आत्माओं प्रति ज्ञान रत्नों एवं शुभ संकल्पों की माला को २३ मणकों के रूप में दर्शाया गया है १) परमात्मा शिव (सर्व आत्माओं के पिता) - सबसे ऊपर २) ब्रह्माबाबा (जगत पिता) व मम्मा (जगत अम्बा – ज्ञान की देवी) ३) संगमयुगी ब्राह्मण ४) १०८ रत्न, १६१०८ दैवी रॉयल घराना ५) ९ लाख दैवी परिवार ६) ३३ कोटि देवी देवतायें ७) धर्म स्थापक, धर्म नेता ८) सप्त ऋषि, ऋषि, मुनि, सिद्ध ९) योगी, सन्यासी , तपस्वी १०) साधु,संत,भक्त,ब्राह्मण ११) ग्रन्थाकार, लेखक, कवि, गायक, संगीतकार १२) पूर्वज, मात-पिता ,मित्र, सम्बन्धी १३) स्वतंत्रता सेनानी, महापुरुष १४) राज्यकर्ता ,राजनेता, प्रशाशक १५) किसान, समाज सुधारक, समाज सेवक १६) शिक्षक, डॉक्टर, वैज्ञानिक, इंजिनियर १७) उद्योगपति, व्यापारी १८) जज, बैरिस्टर , मीडिया कर्मी १९) कानून, देश, समाज रक्षक २०) कलाकार, खिलाड़ी, मनोरंजन कर्ता २१) सर्व विशेष व शेष आत्माएं २२) प्रकृति, ५ तत्व ,प्राणी, जीवजंतु, ग्रह, सितारे २३) ड्रामा और अंत में आत्मा स्वस्तिक के मध्य स्टार रूप में |

यह ज्ञान रत्नों एवं शुभ संकल्पों की माला एक महा ज्ञान है | इसमें बिंदु में सिन्धु का सारा ज्ञान समाया हुआ है जिसे जानने के बाद हर आत्मा ओके (OK) बन जाता है | इस सत्य सार को जो भी धारण करेगा वह सभी बोझों से हलके होकर पंछी समान उड़ती कला का अनुभव करते हुए परमधाम की ओर प्रस्थान करेगा | ओम शांति

ईश्वरीय सेवा में

बी के अनिल कुमार (pathakau71@gmail.com)